मैं चाहता था कि मैं किसी का शागिर्द होता और कुछ मेरे शागिर्द होते लेकिन दुनिया को इतनी जानकारी हो चुकी कि आजकल शागिर्द नहीं होते। बल्कि मुझे तो डर लगता है कि वही लोग शागिर्द होते हैं जो दूसरों से लिखवाते हैं। दरअसल एक-दूसरे को सुनाते हैं बस। मैं अपने शेर बीवी को सुनाता हूं, दोस्तों को सुनाता हूं, बीवी मुझे अपने शेर सुनाती है और ऐसा नहीं कि दोस्तों की राय नहीं मानता।

और पुराने शायर से कम अच्छे शेर नहीं है। ***मुझे खुदा ने ग़ज़ल का दयार बख्शा है, ये सल्तनत मैं मोहब्बत के नाम करता हूं।*** तो मुझे जब मोहब्बत करनी है तो शायरी करनी है। मेरे लिए हिन्दू-मुसलमान कुछ नहीं है। ये मत समझिए कि मैं कोई बहुत बड़ा खोजी हूं, कोई खोज करने वाला हूं। दरअसल मैं स्टूडेन्ट बहुत अच्छा हूं। तो ऐसा आदमी धोखेबाज नहीं हो सकता।

` आज ग़ज़ल का मतलब सिर्फ इश्क या फिर महबूबा से बातें करना ही नहीं रह गया है। इस दौर में ग़ज़ल अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक प्रश्नों से जूझ रही है। इस बदलाव को आप किस रूप में देखते हैं?

` बहुत अच्छी बात है। जो कुछ हमारे मां-बाप ने हमें दिया है वह बहुत बड़ी चीज है यानी मोहब्बत लेकिन यदि हमारे ऊपर कोई हमला कर रहा है तो हम उसकी तलवार तोड़ना जानते हैं। यह हमें आज के जमाने ने सिखाया है। तो जो पहले हुआ है वह भी ठीक था और जो आज हो रहा है वह उससे भी ज्यादा ठीक है। अब पहले से कहीं ज्यादा अच्छी ग़ज़ल लिखी जा रही हैं, ज्यादा अच्छे गीत लिखे जा रहे हैं। मेरा एक शेर है- ***सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा, इतना मत चाहो उसे वो बेवफा हो जाएगा।*** तो हर आदमी यह कह सकता है लेकिन बशीर बद्र ने ही क्यों कहा। तो शेर कहने के लिए खुदा पहले से भेजता है। और अगर उसने नहीं भेजा तो आप शायर नहीं हो सकते लेकिन अगर आप सही नहीं चलेंगे तो एक बटा दस भी नहीं रह जाएंगे।

` उर्दू शायरी में गुरु-शिष्य की एक परम्परा रही है। इस परम्परा के तहत शागिर्द अपने उस्ताद के बहरों पर अधिकार करना सीखते थे। क्या इस दौर में भी उर्दू शायरी में यह परम्परा कायम है?

` मैं चाहता था कि मैं किसी का शागिर्द होता और कुछ मेरे शागिर्द होते लेकिन दुनिया को इतनी जानकारी हो चुकी कि आजकल शागिर्द नहीं होते। बल्कि मुझे तो डर लगता है कि वही लोग शागिर्द होते हैं जो दूसरों से लिखवाते हैं। दरअसल एक-दूसरे को सुनाते हैं बस। मैं अपने शेर बीवी को सुनाता हूं, दोस्तों को सुनाता हूं, बीवी मुझे अपने शेर सुनाती है और ऐसा नहीं कि दोस्तों की राय नहीं मानता। उनकी राय भी मानता हूं और उनको राय देता भी हूं। तो इस लिहाज से उस्ताद-शागिर्दी की जो संस्था थी उसमें दस प्रतिशत अच्छा था और नब्बे प्रतिशत उस वक्त मुगल राज के वक्त में भी खराब था कि जो उस्ताद कह रहा है उसे आप समझ रहे हैं कि खुदा ने कहा है, यह बिल्कुल गलत है।

तो उस समय भी उस्ताद-शागिर्दी की उस परंपरा को आप सही नहीं मानते हैं?

बिल्कुल सही नहीं मानता हूं। मैंने कभी किसी को न दिखाया है और न दिखाऊंगा और सबको दिखाया है, सबको दिखाऊंगा। जो कोई भी मेरे पास आया, मैंने उसे देखा लेकिन यह कभी नहीं कहा कि यह मेरा शागिर्द है। मैंने हमेशा यही सोचा कि छोटा